MLW-527 हिंदी क्षेत्र में अध्ययन यात्रा

स्नातकोत्तर काल (हिंदी)

शानिया नाईक देसाई

अनुक्रमांक:27

PR Number :202006252

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

3/05/24

गोवा विश्वविद्यालय अप्रैल 2024

परीक्षक :

GOA UNIVERSITY TALEIGAO PLATEAU GOA

प्रस्तावना

भ्रमण का अर्थ- सफर तथा यात्रा करना है। हम बहूत से कारणों से भ्रमण करते है। कभी यह भ्रमण व्यापार के सिलसिले मे होता है, तो कभी नए-नए स्थानों को देखने के लिए। इसके अलावा अन्य अवश्यकताओ के कारण भी यात्रा करनी पड़ती है। भ्रमण संसार के व्यवहारिक ज्ञान को प्राप्त करने का सुनहरा अवसर प्रदान करता है।

एम.ए हिंदी के दुसरे सत्र मे 'हिंदी क्षेत्रों मे अध्ययन यात्रा' का विषय होने के कारण हमे भ्रमण पर जाने का मौका मिलता है। हमारे कक्षा के 27 विधार्थी इस विषय को चुनते है। हमारा भ्रमण के लिए दिल्ली जाने का निश्चित होता है। हम अपने प्रा°दीपक और श्वेता के साथ 18 मार्च 2024 को दिल्ली जाने के लिए रवाना होते है।

हमारा ट्रेन में सफर काफी सुखद रहता है। मेरा ट्रेन में सफर पहली बार था। इसलिए मेरे लिए कुछ चिजे चोकाने वाली थी। दो दिन ट्रेन में बिताने के बाद हम 20 मार्च 2024 को दिल्ली पहुंचे। वहा से होटल जाने के लिए हम मेट्रो और टूकटूक गाडी करनी पडी। मेट्रो और टुकटुक गाडी में भी मेरा सफर पहली बार था।

दिल्ली में गोवा की तुलना से काफी प्रदूषण था। वहा पर थंड भी बहूत थी। वहा कही कही पर छोटी छोटी गलियाँ थी तो कही कही पर लंबी लंबी सड़के। इन गलियाँ और सडको पर हरिपिली रिक्षा और टूक टूक गाडियाँ भारी मात्रा में चलती थी। हर जगह पर दरिद्र लोगो से भेट होती थी।

1. अक्षरधाम

पहले दिन हम तयार होकर हम मैट्रो से अक्षरधाम जाने के लिए निकले वहाँ पहुचते ही सबसे पहले हमे हमारा समान जैसे :- पर्स, मोबाईल, स्कूल बैग क्लॉक-रुम मे जमा करना पडा क्यों की उन्हें मंदीर के परिसर में ले जाने की अनुमति नहीं थी। उसके बाद हम सब एक लाईन

में जुड गए जहाँ सबकी तलाशी ली जा रही थी। तलाशी होने के बाद हम सब ने मंदिर के परिसर में प्रवेश किया।

मंदिर के परिसर में प्रवेश करने केलिए कुछ विषेश नियम बने थे। धुम्रपान, शराब, खाने पीने की चीजे, पर्स, मोबाईल आदी चिजे अंदर ले जाने की परवांगी नही थी। प्रवेश करने के लिए ड्रेस कोड भी बना था की आपके कपडे कंधे और घुटने तक ढके होने चाहिए। अगर आपने ऐसे कपडे नही पहने है तो आप वहाँ सौ रूपये में किराए पर कपडे लेने पडते है।

यहा मंदिर स्वामी नारायण का मंदिर हे जिसे अक्षरधाम मंदिर से जाना जाता है। यह भरत के सबसे लोकप्रिय हिन्दू मंदिरों में से एक है। अक्षरधाम मंदिर, 06 नवंबर 2005 को खोला गया था ।100 एकड़ भूमि में फैले इस अक्षरधाम मंदिर में देश-विदेश से रोजाना सैकडो लोग आते है। जिसेक चलते वहा पकिस्थानी आतंकवादी का हमला हो चुका है। विश्व में हिन्दूओं का सबसे बडा मंदिर होने के चलते 2007 में इसे गिनिज बुकॅ ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है।

यह मंदिर दर्शन के लिए सुबह 10:00 बजे से शाम 06:30 बजे तक खुला रहता है। मंदिर परिसर में प्रवेश और मंदिर दर्शन बिल्कुल मुफ्त है। यह मंदिर मंगलवार से रविवार खुला रहता है और सोमवार को बंद रहता है।

हमने मंदिर के परिसर में प्रवेश किया। मंदिर का परिसर बहूत ही खिबसुरत था। हमने सबसे पहले मयूर द्वार (पिकोक गेट) के अंदर प्रवेश किया। जहाँ मंदिर के बारे में और स्वामी नारायण के बारे में जानकारी थी। वहा से हमें उनके बारे में काफी सारी जानकारी मिलि।

उसके बाद हमने अक्षरधाम मंदिर के बाहर अपने जूते उतारे और मंदिर के अंदर प्रवेश किया। मंदिर बाहर से जितना सुंदर लग रहा था अंदर से कई ज्यादा सुंदर था। मंदिर के गर्भगृह में स्वामी नारायण की भव्य मूर्ति थी। इस मूर्ति के दोनों बाजू में कुछ .अन्य मुर्तिया भी थी। इन मूर्तियों के अतिरिक्त मंदिर में कुछ अन्य हिन्दू देवि-देवताओं जैसे राधाकृष्ण, लिक्ष्मीनारायण राम-सीता, शिव-पारवती आदी मुर्तिया थी। इस मंदिर के 234 खंभों पर जीव-जंतुओं, नर्तको , संगीतकारो और देवि-देवताओं कि जटिल नक्काशी थी। मंदिरो के दिवारो पर चित्र लगे हुए थे जिसने स्वामी नारायण की कहानियाँ दर्शायी थी। मंदिर में स्वामी नारायण के ईस्तमाल किए गए कुछ चिजें रखी गयी थी जैसे: कपड़े, बर्तन आदी। दर्शन करने के बाद ऐसा प्रतीत हो रहा था की एक नवीन उर्जा हमारे अंदर आ गई हो।

1. इंडिया गेट

दुसरे दिन हम सुबह इंडिया गेट जाने के लिए निकले। इंडिया गेट दिल्ली के प्रमुख आकर्षणों में से एक है। यह करीब 70 हजार ऐसे भरतीय सैनिंको का स्मारक हे, जो पहले विश्व युध्द के दौरान शहीद हो गए थे। यह स्मारक नई दिल्ली में राजपथ मार्ग पर स्थित है और इसकी नींव 1921 में ड्यूक ऑफ कनाट ने रखी थी।

इंडिया गेट के शीर्ष पर INDIA शब्द लिखा गया है। यह लाल और पिले बलूआ पत्थरों से बना हुआ है। इसके दिवारों पर इन सभी सैनिकों के नाम अंकित है जो विश्व युध्द के दौरान शहीद हो गए थे।

इंडिया गेट के पास ही एक अन्य स्मारक है जो 1871 मे भारत और पाकिस्तान के बिच युध्द के दौरान प्राण न्योछावर करने वाला बहादुर भरतीय सैनिकों को श्रध्दांजलि देने के लिए बनाया गया है। यहाँ जवानों की याद में अमर जवान ज्योति जल रही है। जो तब से लेकर आज तक निरंतर जलती जा रही है। इस अमर ज्योति स्मारक के पास एक पुरुष

सैनिकों की वेशभुषि कर काफी देर तक स्थिर खडा रहता है और उनके बाद इस भुमिका को निभाने के लिए कोई अन्य पुरुष आ जाता है।

इंडिया गेट और अमर जवान ज्योति स्मारक के बिच नेताजी सुभाषचंद्र बोस की प्रतिमा है। वहा हर साल गणतंत्र दिवस के अवसर पर परेड निकाली जाती है। इंडिया गेट के चारों तरफ़ हरियाली, हरे-भरे बाग और एक झिल है। रात के समय इंडिया गेट पर लाइटनिंग का अदभुत नजारा देखने को मिलता है।

३. साहित्य अकादमी

इंडिया गेट के बाद हम साहित्य अकादामी चले गाए। वहाँ हम सबसे पहले किताबों के सेक्शन में गए। जहा हमे कई सारी किताबे देखने को मिली। वहा पर भारत की सभी

भाषाओं की किताबे थी। वहा बैरवी, नवदुर्गा, कला वसूधा, नाट्य, नटरेग आदी नाट्य साहित्य की पुस्तके थी। आधीवासी संस्कृति संगतो एव नृत्य आदी भारतीय संस्कृति की किताबे थी। इसके साथ ही जीवनी किताबे भी थी। वहा पर मैंने ऐसी किताबे भी देखी जो मेरे विश्वविधालय में मैंने कभी नही देखी थी। किताबे देखने के बाद हम वाचनालय में चले आए। जहा पर कुछ लोग किताबे पढ़ रहे थे। उन लोगो को देख ऐसा लग रहा था की वे बहूत बडे विद्धवान है।

उसके बाद हम वादय यंत्र के सेक्शन में गये। जहाँ भारत के हर प्रान्त के वादय यंत्र रखे थे। प्रत्येक वादय के बगल में वादय यंत्र के नाम और वादय यंत्र के राज्य का नाम लिखे हुए थे। वहाँ पर तमिल नाडू का घटम, बिहार का बसुरी, गुजरात का वेनो, लढाक का डमरु, गोवा का घूमट आदी वादय यंत्र थे। उसके साथ ही वहाँ पर महान संगीतकारो की तस्वीरे लगी हुई थी।

अत में हम मुखोटो के सेक्शन में चले गए। वहाँ पर विभिन्न प्रकार के मुखोटे थे। रामलिला, रासलिला, दशावतार आदी लोक नट्यो में प्रयोग किए जाने वाले देवी-देवताओं तथा राक्षसो के मुखोटे थे। इसके साथ ही विभिन्न क्षेत्रों के नृत्य में प्रयोग किए जाने वाले मुखोटे थे। बिहार के चाऊ नृत्य आदी में प्रयोग किए जाने वाले मुखोटे थे।

५ कमल मंदिर

दोपहर को खाना खाने के बाद हम कमल मंदिर (lotus temple) देखने चले गये। यहाँ भी

हमारी सबसे पहले गेट के बाहर तलाशी ली गई। तलाशी के बाद हमने मंदिर के परिसर में प्रवेश किया। मंदिर का परिसर भव्य और सुन्दर था। चारो तरफ़ हरयाली, पेड -पौधे और उसके बिच में स्थित कमल के आकर का कमल मंदिर बहोत सुन्दर लग रहा था।

मंदिर 20 फीट की ऊंचाई पर है, जिस तक पहुँचने के लिए सीढियां बनी हुई है। इस कमल के आकर का मंदिर 27 पंखुड़ियों से बना है और चारो ओर से 9 दरवाजो से घिरा है। इसी साथ ही मंदिर को तालाबो और पार्क से सजाया है।

मंदिर के बहार काफी भीड़ थी। केवल भारतीय नही बल्की विदेशी भी वहाँ आए हुए थे। मंदिर के अंदर जूते पहनकर जाना और मोबाईल लेकर जाने की अनुमति नहीं थी। जुते, चप्पल मंदिर के बहार रखने के लिए थैलियों का प्रबंध किया हूआ था। हमने हमारे जूते-चप्पले थैली में डाले और अपने मोबाईल सर को दिए।

मंदिर के अंदर जाने के लिए लंबी कतार लगी हूई थी। हम भी कतार में जुड़ गये। मंदिर के अंदर प्रवेश करते ही मैं चैक गयी। मंदिर के अंदर कोई भी भगवान की मूर्ति नहीं थी। सिर्फ केई सारे बेंचिज और कुछ पौधे थे। दरसल इसका निर्माण बहा उल्लाह ने करवाया था, जो की बहाई धर्म के संस्थापक थे। और बहाई सामुदाय के मुताबिक ईशवर का कोई आकर नही है, उसके अनेक रूप हो सकते है। मूर्तिपूजा को नही मानते थे।

कहने के लिए यह एक मंदिर है, लेकिन लोगो को इसकी वास्तुकला लोभति है। किसी भी धर्म के लोग या जाती के लोग कमल मंदिर के अंदर आ सकते है, और प्रार्थना कर सकते है। इसके साथ ही मंदिर के अंदर किसी भी वाद्य यंत्र का बजाने पर सक्त पबदि है। मंदिर मे अपको बिल्कुल भी बोलने की अनुमति नहीं है, यहाँ शांति बनए रखने की सलाह दि जाती है। दरसल लोग यह शांति और सुकून अनुभव करने आते है। हम ने भी मंदिर के अंदर बैच पर बैठे और शांति और सुकून अनुभव किया।

5 हुमायूँ का मकबरा

कमल मंदिर के बाद हम हुमायूँ का मकबरा देखने चले गए। हमने सबसे पहले टिकट ली और मकबरे के परिसर मे प्रवेश किया।

भारत की राजधानी मे स्थित हुमायूँ का मकबरे का निर्माण हुमायूँ की पत्नी हमिद बानू बेगम ने हुमायूँ की मुत्यू के बाद उनकी याद मे बनाया था। हुमायूँ के मकबरा का बाहरी नजारा बेहद खूबसूरत है। क्योंकि यह मकबरा बागों के बिच बना हूआ है। इस मकबरे का निर्माण 1570 मे हूआ था। फारसी और भरतीय स्थापत्य शैली के मिश्रण से निर्मिती हुमायूँ का मकबरा भारत में मुगल वस्तुकला का पहला उदाहरण है। इस मकबरे के निर्माण मे लाल बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर का प्रयोग किया गया।

हुमायूँ का मकबरा मुगल साम्राज के तीसरे शासक यानी हुमायूँ के बेटे अकबर के आदेश सय्यद मुहम्मद गयास ने बनाया गया। इसे मुगलो का शयनागर भी कहा जाता है क्योंकि यहा मुगल परिवार के 160 सदस्य दफन है। मुगल साम्राज् हुमायूँ की मकबरे के केंद्रिय मुर्दाघर के अंदर स्थित है। भारत मे मुगल काल का पहला मकबरा होने ले कारण बकी सभी मकबरे इसकी तर्ज पर तैयार किए गए। यह तक की सात अजुबे मे शामिल ताज महल भी इसी तर्ज पर बना है।

हम सबने मकबरे के अंदर कई सारे कब्र देखे जो अलग-अलग कक्ष मे रखे हए थे। हुमायूँ के मकबरे कि दिवार जाली के आकर की बनायी गयी थी। ताकी रोशनी उन मकबरों पर पडे।मकबर चारो और से समान आकार का था और उसके उपर सफेद रंग का मुख्य गुंबद बहूत सुंदर दिख रहा था मकबरे के मुख्य द्वार के अंदर हुमायूँ का इतिहास मकबरे से जुडी जानकारी और ईसा खान के मकबर की खुदान के दौरान प्राप्त हूई कुछ चिजे रखी थी।

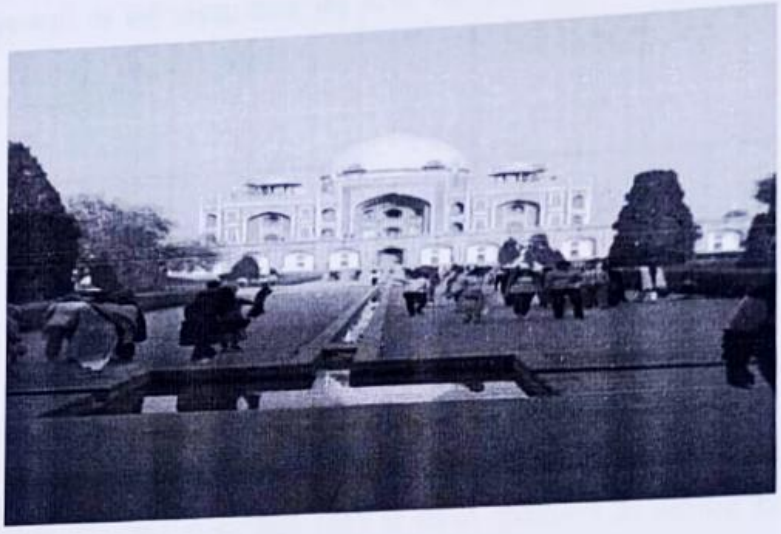

६ लक्ष्मीनारायण मंदिर (बिरला मंदिर)

हम रात को लगभग 8:00 लक्ष्मीनारायण मंदीर में दर्शन करने चले गये। इस मंदिर को बिरला मंदिर से भी जाना जाता है। इस मंदिर के अंदर जाने केलिए भी हमे हमार समान और मोबाईल क्लॉक रुम मे रखना पड़ा और तलाशी लि गई। यह मंदिर बाहर से बहूत सुंदर लग रहा था।

ये मंदिर लक्ष्मी नारायण को समर्पित है। साथ ही यह पर वेंकटेश्वर, राधा कृष्ण, मॉ सरस्वती, श्री राम, शिव, दुर्गा, सूर्य और श्री गणेश जैसे विभिन्न देवी-देवताओं की मूर्तिया भी मौजूड है। इस मंदिर के अंदर दिवारों पर रामायण, महाभारत, पुराणो, वेदो काहानियॉ चित्रो के माध्यम से दर्शायी थी।

इस मंदिर को 1622 मे वीर सिंह देव ने बनवाया था। इस मंदिर का उद्घाटन 1939 में राष्टपिता महात्मा गांधी ने किया था। गांधी जी ने इस मंदिर का उद्घाटन इस शर्त पर किया था की इस मंदिर मे हर जाति और धर्म के लोगों को जाने की अनुमति दी जायेगी।

हमने दर्शन करने के बाद प्रासाद लिया और वापस चले आए।

7. दिल्ली यूनिवर्सिटी

भारत की टॉप यूनिवर्सिटी में से एक है। दिल्ली विश्वविद्यालय को टॉप 100 यूनिवर्सिटी में से 22 वे स्थान पर रखा गया है। साल 1922 में दिल्ली यूनिवर्सिटी की स्थापना हुई थी।

दिल्ली यूनिवर्सिटी का कैम्पस में हरयाली, पेड़-पौधों से भरा हुआ था। उसके बिचों बिच स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा थी। एक कोने में कबूतरों के लिए खाना डाला था। यूनिवर्सिटी के विपरित दिशा में केंद्रिय पुस्तकालय था।

हमने दिल्ली यूनिवर्सिटी के अंदर प्रवेश किया। वहाँ पर एक भी कक्षा में व्याख्यान नहीं चल रहा था। वहाँ के एक सर ने बताया की होली की छुटिया चल रही है। उन्होने यह भी बताया की वहाँ हफ्ते में एक बार लेकच्चर होते है और वह भी दोपहर के समय। व्याख्यान ज्यादा न होने के कारण वह साफ सफाई करने की भी नोबत नही पढती।

मैंने एक बात नोटिस की वहाँ हर कक्षा में विध्यर्थीयों के बेठने के लिए काफी छोटे बैंचिस थे और हर जगह दिवारों पर कई सारे नियम थे।

४ हिन्दू कॉलेज

हिंदु कॉलेज की स्थापना 1899 में श्री कृष्ण दास जी ने कि थी । यह 125 साल पुराना कॉलेज है । यह कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय से पहले बना था ।

इस कॉलेज की अभीरंग नाम की सोसाइटी है जो हिंदी के विद्यार्थीओं द्वारा चलाई जाती है। यहा मैका नामक वार्षिक महोत्सव मनाया जाता है। जिसे देखने के लिए बाहर से कई लोग आते है।

हिंदू कॉलेज में वहा से पढकर गए पुराने छात्रों की तस्वीरे दिवार पर लगी हुई थी । जिनमें से कुछ राजनेता, अभिनेता , क्रिकेटर आदी बन चुके है ।

यहा प्रयोगशिला , खुला मंच, स्पोटर्स कॉम्पलेक्स, सेमिनार होल आदी है

९ जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय

जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय भारत के टॉप विश्वविघालयो में दूसरे रैंक पर है और विश्व के टॉप विश्वविद्यालयों में दसवे रैंक पर है। इसका स्थापना 1869 में हुई थी।

हम जब वह गए थे तब वहा चुनाव का मौहल था ।विश्वविद्यालय के कैम्पस मै भीड़ जमी हुई थी। उस भीड़ में से नारे की आवाजे आ रही थी। दो विरोधी पक्ष के बिच हाथापाई हो रही थी।

हमे वहाँ पूजा, विशाल और अशीष इन तीन विध्यर्थीयों से भेट हूई। पूजा ने हमे बताया की जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के कोर्स फिस दिल्ली बाकी विश्वविद्यालय के मुकाबले काफी कम है और हॉस्टल में रहना फ्री है केवल मेस के लिए पैसे लगते है।

वही पर Dr B.R अंबेडकर केंद्रिय पुस्तकालय था वहा पर सभी भाषाओं की किताबे थी। हिंदी केलिए एक अलग सेक्शन था। वहा रवींद्रनाथ की कविताए, चाहे जितन हर जाऊ, मैंने अभी अभी सपनो के बिच बोए थे आदी कविता संग्रह थे। महाभारत, रामायण आदी धर्मीक ग्रथ थे तथा भाषा काव्य शास्त्र की परंपरा ,भाषा, संस्कृति और समाज आदी अन्य पुस्तके थी।

१७. ताजमहल

23 मार्च 2024 को हम दोपहर के समय ताजमहल देखने गाए थे। वहाँ पर हमे प्रितम नामक व्यक्ति ने ताजमहल के सबंध में थोड़ी बहुत जानकारी दी।

ताजमहल के निर्माण का कार्य 1631 को शुरु हूआ था जो 1653 में पुरा हूआ। इसे बनाने के लिए बीस हजार मजदूरों ने काम किया। ताजमहल का निर्माण शाहजहां ने किया था। अपनी पत्नी मुमताज की प्रेमपूर्ण याद में। ताजमहल का निर्माण में लाल पत्थर, सफेद मार्बल, पीतल, सोना, नीलम, मोती, मकरनी पत्थर और रत्नो का उपयोग किया गया है। ताजमहल की ऊंचाई 243 फीट है। ताजमहल के शिखर पितल से बना हुआ है । मुगलो के समय वह

सोने का था। अंग्रेजों ने सोना को निकालकर पितल का स्थापित किया। ताजमहल चारो ओर समान आकर का बना हुआ है। यह ताजमहल यमुना नदी के किनारे बनाया हुआ है, शाहजहां ने ताजमहल के लिए जानबूझकर इस स्थान को चुना था। ताकी बाढ, तूफान और कटाव इसे नूकसान न पहुँचा सके।

ताजमहल के लीए तीन प्रवेश द्वार है। दक्षिण, पूर्व, पश्चिम। मुगलों के समय पूर्वी द्वार विआइपी लोगो के लिए, पश्चिम द्वार आम जनता के लिए और दक्षिणी द्वारा मजदूरों के लिए प्रयोग होता था। ताजमहल के बाई ओर मेहमान खाना है और दाई ओर मस्जिद है। ताजमहल के समाने शाही दरवाजा है। उसपर कुरानिक गृथो की जडे काले सगमामर में है। ताजमहल को बनने मै 22 साल लगे इसलिए उसपर 22 गुबंद बनए है।

ताजमहल को बनने के लिए ऐसे पत्थरो का प्रयोग किया है जिससे ताजमहल रात को चांद की रोशनी पडने पर वाह चमकता है। यह नजारा देखने के लिए कई लोग रात के समय आते है। इस समय केवल एक घंटे में 15 लोगों को देखने की अनुमति है।

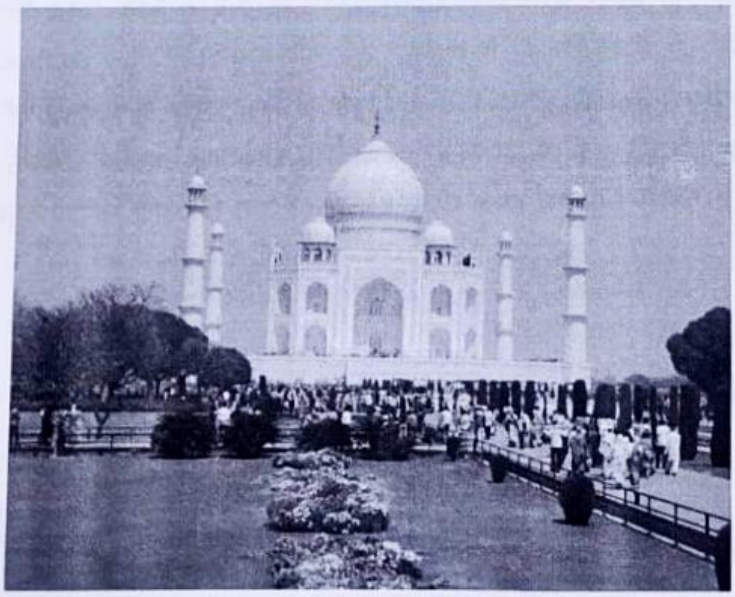

११- मथुरा

मथुरा **पहुँचते** पहुँचते श्याम होने को आयी। मथुरा की सडको **पर** श्री कृष्ण के और राधा रानी के भक्त 'राधे राधे' का जयकारा लगा रहे थे। मथुरा मे कई सारी गोशालाए थी जहा गो माताओ का ध्यान रखा जा रहा था। ऐसी गोशालाओं की व्यवस्था मैंने पहले कभी नही देखी थी। गाय हमारी माता है उनका ध्यान रखना और रक्षा करना हमारी संस्कृति रही है। मथुरा के लोग इस संसकृति का पालन कर रहे है।

हम टुक टुक गाडी से कृष्ण जन्मभूमि मंदिर जाने के लिए निकले। मंदिर के मुख्य द्वार के पास पहुँचते ही हमने देखा की मंदिर मे प्रवेश करने के लिए तलाशी ली जा रही है। तलाशी लेने के बाद अंदर प्रवेश किया। हम सब गुम न हो जाए इसलिए एक दूसरे का हाथ पकड़कर चल रहे थे क्योंकि वहाँ बहुत भीड़ थी। मंदीर के अंदर प्रवेश करते ही हमने भगवान श्री कृष्ण और राधा रानी के दर्शन किए। पिले वस्त्रो में दोनो की मुर्तिया बहुत सुंदर दिख रहा थी। हमारे दर्शन करने के बाद तुरंत पर्दा लगया। हमार भग्य अच्छा था की हमे पर्दा लगने से पहले दर्शन प्रप्त हुए। मुख्य मंदिर के दर्शन करने के बाद हमने उस मंदिरो के आस-पास दर्शन किए। मंदिर के प्रवेश द्वार के बाहर कई सारी दुकाने थी जहां भगवान की मुर्तिया, उनकी तस्वीरें, चूडियां आदी कई सारी चीजें काफी सस्ती मिल रही थी। हमने सभी ने वहा थोड़ी बहुत शॉपिंग की। मेने वहा से छोटी बालरुपी कृष्ण की मूर्ति खरिदी।

१२. वृदावन

उसके बाद हम वृदावन जाने के लिए निकले वृदावन को गलियाँ से गुजरते हुए हम् बिहारी के मंदिर के पास पहुँचे। मंदिर के बाहर हमे एक पंडितजी मिले जिन्होने हमे भगवान श्री कृष्ण की कहानी बतायी और मंदिर के बारे मे कुछ जानकारी दी। उन्होंने कृष्ण की कहानी बताते हुए बताया की श्री कृष्ण का जन्म मथुरा मे हूआ था, कृष्ण के पिता का नाम वासुदेव और माता का नाम देवकी था। वसुदेव श्री कृष्ण को कंस से बचाने के लिए यमुना नदी के इस पार गोकुल ले गया। गोकुल में श्री कृष्ण का पालन-पोषण नंदबाबा और यशोदा मैया ने किया। कंस श्री कृष्ण का मामा था जो कई राक्षसौ को श्री कृष्ण को खत्म करने के लिए बेजता था। भगवान श्रीकृष्ण उसके भेजे गये सभी राक्षसो का वध किया करते थे ।यह द्वोपर युग की कहानी बताने के बाद वे कलयुग की कहनी बताते है वे निधिवन की कहानी बताते हुए कहते है की वहा का नियम है की सूर्य आस्त होने के बाद वन को बंद किया जाए। कोई

भी चौरी चुपके ठहर जाए तो वह पागल हो जाता है या वह मर जाता है। भगवान कृष्ण आज भी वहा रास रचाने के लिए आते है।

इसके अतिरिक्त उन्होने मंदिर के मर्यादाओं मे बारे मे बताया। पहली मर्यादा उन्होने बतायी था की मंदिर के दर्शन कारने से पूर्व हमे हमारे माता पिता के चरणों का स्मरण करना है क्योंकि जो व्यक्ति माता पिता को नही मानते भगवान उनकी भक्ति स्वीकार नहीं करते। दुसरा नियम उन्होने बतया की मंदिर में कही भी फुल और रुपये फेंककर नहीं मरना चाहिए इसमें लक्ष्मी का अपमान होता है।

इस मंदिर के सामने एक आश्रम था जहाँ कई विद्वाए भजन किर्तन करती है और उनका पालन पोषण बिहारी का मंदिर करता है।

इसके बाद हम दर्शन करने के लिए मंदिर के अंदर चले गए । मंदिर के अंदर दिवारों पर उन व्यक्तीओ के नाम लिखे थे जिन्होंने मंदिर के लिए बड़ी से बड़ी रकम दाम में दे दी थी। मंदिर के गर्भगृह में स्थित श्री कृष्ण की मूर्ति काफी सुंदर थी। उस मंदिर के पड़ित ने हमे मनोकामना माला के बारे में बताया जिसे पहनने से मनुष्य के सभी कष्ट दूर हो जाते है। मैं वह मनोकामना माला लेना चाहती थी लेकिन उसके लिए हमे 500 रुपये मंदिर मे दान करने थे।

Galaxy A52

13. राष्ट्रीय बाल भवन

राष्ट्रीय बाल भवन में खरगोश, कबूतर आदी कई सारे पशु-पक्षीओं को पिजरें में रखा हुआ था। वहा पर विभिन्न प्रकार के शीशे थे। जिसके मध्यम से हम आनंद ले रहे थे । वहा के बच्चों ने आपने हाथो से बनाई हूई चिजे थी जैसे ड्रीम केप्चर, तस्वीरे आदी । आंगन मे बच्चो की ट्रेन थी। वहा के दिवारों पर संगीतकार के, गायक के, नर्तक के चित्र निकाले हुये थे।

१५. राज घाट

राज घाट महात्मा गांधी की समाधी स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। 1948 में महात्मा गांधी की हत्या के बाद उनका अंतिम संस्कार दिल्ली में स्थित यमुना नदी के पश्चिमी किनारे किया गया था । उस जगह को आज के समय में राजघाट नाम से जाना जाता है । गांधी जी की समाधी को काले संगमरमर से बनाया है । जिस पर गांधी जी का अंतिम स्वर 'हे राम ' लिखा है । समाधी स्थल के पास ही एक दीपक रखा गया था जो हमेशा जलता है । समाधी स्थल पर कई मालाए रखी हुई थी।

महात्मा गांधी के समाधी स्थल के कुछ ही दूरी पर एक म्युजियम भी बना हुआ था। जहाँ महात्मा गांधी से जुड़े ब्लैक और वाइट फोटोज़ एवं उनसे जुड़ी नाव, बैंच , गाडी आदी कुछ वस्तुओ को भी रखा गया था ।

18. अग्रसेन की बावली

माना जाता है की अग्रसेन की बावली का का निर्माण महाभारत काल में महाराजा उग्रसेन नामक अग्रोहा के राजा द्वारा किया था। यह एक सीढ़ीनुमा कुआं है।उस समय इस बावली को शहर में पानी की आपूर्ति के लिए बनाया गया था।

इसके चारों ओर कक्ष बनाए गए हैं ।अग्रसेन की बावली में करीब 105 सीढ़ियां है और यह सीढ़ियां बडी बडी बडी है । यहां कई फिल्मों की शूटिंग भी की जा चुकी है। मुझे यह जगह काफी डरावनी लग रही थी ।

१७ - लाल किला

लाल किला का असली नाम किला-ए-मुबारक है। यहा पर प्रधानमत्री हर वर्ष 26 जनवरी के दिन तिरंगा फैलाते हैं।

हम लाल किला देखने गए थे तो हमारे पास ज्यादा समय न होने के कारण हम वहा थोडी देर केलिए रूके थे ।

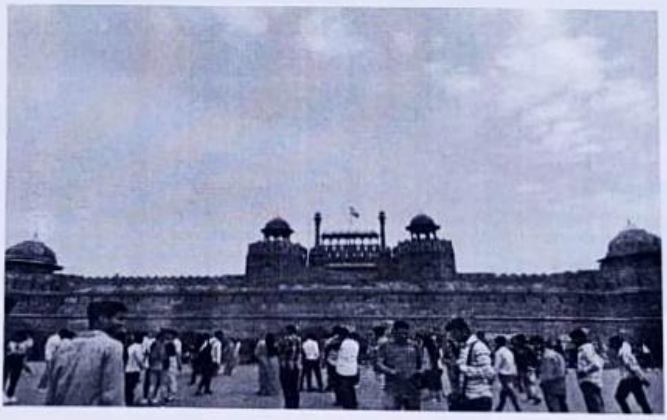

17. कुतुब मीनार

कुतुब मीनार का निर्माण 1199 से 1220 में किया गया था। लाल किला को बनाने की शुरुआत कुतुबुद्दीन-ऐबक ने की थी, लेकिन उनकी मृत्यु के बाद उनके उत्तराधिकारी इल्तुतमिश ने इस मीनार का निर्माण कार्य पूरा किया ।एक समय था जब लाल किले का दरवाजा खुला हुआ करता था, जिसे देखने के लिए लोग अंदर जाया करते थे। लेकिन 4 दिसंबर 1981 में लोगों के साथ एक भयानक हादसा हुआ, जिसकी वजह से अंदर भगदड़ मच गई और करीबन 45 लोगों की मौत हो गई। इसके बाद से कुतुब मीनार का ये दरवाजा बंद कर दिया गया। कुतुब मीनार का प्रवेश द्वार दिल्ली सल्तनत के अला-उददीन खिलजी द्वारा बनवाया गया था।कुतुब मीनार की ऊंचाई 72.5 मीटर है, इसमें करीबन 379 सीढियां हैं ।ओ कुतुब मीनार के परिसर की स्थित को देखकर ऐसा लग रहा था की किसी ने महल पर बम से प्रहार किया हो। कुतुब मीनार के पास ही एक लोहे का स्तम्भ भी था।

१९ जामा मस्जिद

जामा मस्जिद के तीन संगमरमर के गुबंद हैं ।इसके तीन दरवाजे हैं।एक लाल किला की तरफ, दूसरा दरीबा कलां की ओर और तीसरा बाजार मटिया महल की तरफ खुलता है। जामा मस्जिद के बाद देशभर में कई मस्जिदें इसके डिजाइन को ध्यान में रखकर बनीं। इस मस्जिद में एक साथ 25000 लोग बैठ कर नमाज पढ़ सकते हैं। इस मस्जिद के निर्माण का काम वर्ष 1650 में शुरू हुआ था और यह 1656 में बनकर तैयार हुई थी। जामा मस्जिद को पांच हजार से ज्याद मजदूरों ने मिलकर बनाया था ।पाकिस्तान के लाहौर में जो बादशाही मस्जिद है, वह भी दिल्ली की जामा मस्जिद से मिलती जुलती है।

यह मस्जिद भव्य तथा सुंदर है। इस मस्जिद के सामने एक तलाब है जिसमें लोग हाथ पैर धोकर मस्जिद के अंदर जाते हे

निष्कर्श

दिल्ली में हमार जितने भी दिन बीते सुखपूर्वक बीते। स्थान बदल जाने पर हमारे स्वास्थ पर थोडा बुरा असर पड़ा लेकीन हमारे उत्साह के कारण वह दब गया।

दिल्ली में हम काई स्थानो पर घुमे। कुतुब मीनार, रजघाट, ताजमहल, अग्रेसन की बावली, हुमायूँ का मकबरा एतिहासिक स्थान, लक्ष्मीनारायण मंदिर, वृदावन, मथुरा, जमा मस्जिद, आक्षरधाम धार्मिक स्थान, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय ,हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय और साहित्य अकादमी, राष्ट्रीय भवन, सरोजनी मार्केट स्थानों पर गए । वहाँ हमे उनके बारे मे व्यपाक जानकारी प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त हमे दिल्ली कर अर्थिक और समाजिक स्थिति की भी जानकारी मिली।